एच.आई.वी./एड्स संक्रमण संबंधी भ्रांतियां

एच.आई.वी./एड्स इनके द्वारा नहीं फैलता है:

एच.आई.वी./एड्स संक्रमण से बचाव

असुरक्षित यौन संबंधों से बचें

- कंडोम का सही और नियमित उपयोग करें।
- अपने साथी के साथ ईमानदार रहें।
- अधिकृत ब्लड बैंक से प्राप्त खून चढ़वाएं (ब्लड ट्रांसफ्यूजन)।
- हमेशा डिस्पोजेबल सीरिंज और सुई का प्रयोग करें।
- एच.आई.वी. पॉजिटिव/एड्स गर्भवती महिलाएं पी.पी.टी.सी.टी. थेरैपी कराकर अपने अजन्मे बच्चे को एच.आई.वी./एड्स संक्रमित होने से बचाएं।

गर्भनिरोध क्या है?

गर्भनिरोध एक ऐसी विधि है, जिसके द्वारा गर्भधारण/गर्भावस्था को रोका जाता है।

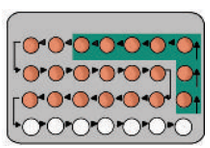

पुरुषों एवं महिलाओं के लिए गर्भनिरोध के विभिन्न तरीके

- पुरुषों के लिए उपलब्ध गर्भनिरोधक कंडोम हैं, जो कि सरल और इस्तेमाल करने में भी आसान है और इससे प्रजनन अंगों के संक्रमण यौन संक्रमण तथा एच.आई.वी./एड्स संक्रमण से भी सुरक्षा मिलती है।
- महिलाओं के लिए गर्भनिरोधक गोलियां (ओ.सी.पी.) और कॉपर–टी जैसे कि इंट्रायूटेरिन डिवाइसेस् (आई.यू.डी.) केवल उन महिलाओं के लिए जिनके एक या दो बच्चे हैं, सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध हैं। महिला के लिए गर्भनिरोध के अन्य तरीके जैसे कि महिला कंडोम्स, गर्भनिरोधक सुईयां आदि भी उपलब्ध हैं।

एच.आई.वी./एड्स के बारे में अधिक जानकारी हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र या जिला अस्पताल स्थित एड्स परामर्श केन्द्र (आई.सी.टी.सी./पी.सी.टी.सी.) पर सम्पर्क करें।

एच.आई.वी./एड्स गर्भवती महिला ए.आर.टी. (एंटी रेट्रोवायरल थैरेपी) लेकर होने वाले बच्चे को एच.आई.वी. संक्रमण होने से बचा सकती है।

इस विषय में अगर मन में कोई सवाल हो तो आप अपने क्षेत्र में स्थापित किशोर स्वास्थ्य क्लिनिक की काउंसलर/आशा/ए.एन.एम. से भी बात कर सकते हैं या अपने फोन में साथिया ऐप भी डाउनलोड कर सकते हैं।

आप पुनः क्लिनिक जरूर आयें।

काउंसलर का नाम .... फोन नं ....

क्लिनिक खुलने का समय ....

वात्सल्य

mamta-himc

NUTRITION INTERNATIONAL Nourish Life

UP-TSU

unicef for every child

स्वच्छ भारत एक कदम स्वच्छता की ओर

RKSK Rashtriya Kishor Swasthya Karyakram राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

NATIONAL HEALTH MISSION राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

रहेगी सावधानी, तो नहीं होगी यौन और प्रजनन स्वास्थ्य की परेशानी

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

यौन रोगों के लक्षण

किशोर/पुरुष

- लिंग से हरा, पीला, बदबूदार, मवाद जैसा पानी आना
- पेषाब के दौरान दर्द या जलन
- यौन अंगों में गिलटियां होना
- यौन अंगों में छाले या फफोले होना (अल्सर)
- जननांग में वार्ट
- यौन अंगों पर चकत्ते
- यौन अंग में खुजली या झनझनाहट
- अंडकोष में भारीपन या दर्द

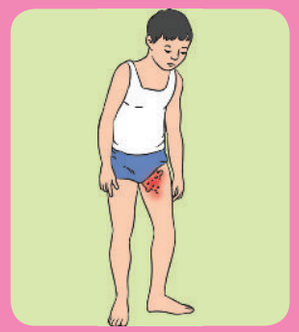

किशोरी/महिलाएं

- अनियमित माहवारी
- लगातार पेट के निचले हिस्से/पेडू में दर्द
- योनि से हरा, पीला, बदबूदार, मवाद जैसा पानी आना
- योनि में दर्द, सूजन या जलन होना
- पेषाब के दौरान जलन
- जननांग पर घाव

याद रखें

महिलाओं में संक्रमण के कभी–कभी कोई लक्षण नहीं होते हैं और ये बहुत बाद में दिखते हैं।

यौन संचरित संक्रमण के परिणाम

- बांझपन हो सकता है।
- कैंसर सहित कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।
- रोग के मामले में मृत्यु भी हो सकती है।
- गर्भावस्था के दौरान और नवजात बच्चे में भी जटिलताएं आ सकती हैं।

एच.आई.वी./एड्स जैसे कि यौन संक्रमण का उपचार नहीं किया जा सकता है, लेकिन समय पर निदान होने से इसका प्रबंधन किया जा सकता है।

प्रजनन अंग का संक्रमण (आर.टी.आई.) अथवा एच.आई.वी./एड्स के कारण

ये संक्रमण पूरी स्वच्छता और साफ–सफाई नहीं होने के कारण होते हैं, जिनमें गंदे शौचालयों, गंदे सैनिटरी पैड्स का इस्तेमाल, हर दिन स्नान के समय जननांगों की खासतौर पर लड़कियों द्वारा माहवारी के दौरान ठीक से सफाई नहीं करना शामिल हैं।

याद रखें

एक बार भी असुरक्षित यौन संबंध बनाने से यौन संक्रमण या एच.आई.वी./एड्स संक्रमण हो सकते हैं।

यौन रोगों के हानिकारक प्रभाव और एड्स है क्या?

एच.आई.वी./एड्सः एक्वायर्ड इम्यून डेफिसिएंसी सिंड्रोम (एड्स) वह अवस्था है, जिसमें एच.आई.वी. संक्रमण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बहुत कम स्तर पर ला देता है। इससे संक्रमित व्यक्तियों को विभिन्न छोटी लेकिन संभवतः घातक गंभीर संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

एच.आई.वी. के संक्रमण से शरीर की रोगों से लड़ने की ताकत समाप्त हो जाती है। एच.आई.वी. का ही अंतिम रूप एड्स होता है, जिससे दूसरे संक्रमण जैसे टी.बी., डायरिया, निमोनिया, आदि असमय संक्रमित व्यक्ति को हो जाते हैं, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है।

एच.आई.वी./एड्स संक्रमण होने के तरीके

- साथी के साथ असुरक्षित यौन संबंध या अप्राकृतिक यौन संबंध बनाना।

- एच.आई.वी./एड्स संक्रमित सूइयों का उपयोग करना।

- एच.आई.वी./एड्स संक्रमित खून चढ़वाना (ट्रांसफ्यूजन)।

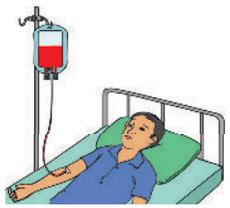

- एच.आई.वी./एड्स संक्रमित माता–पिता से होने वाले बच्चों में।